# अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : चतुर्थ – जैन धर्म मध्यमा (परीक्षा 20 जुलाई, 2014)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

**केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर**

**परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–**

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. किसी भी प्रकार की नकल नहीं करें एवं किसी से बातचीत का भी प्रयास नहीं करें। इसके अंक काटे जा सकते हैं अथवा परीक्षा निरस्त की जा सकती है।
5. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
6. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

**जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–**

| प्रश्न क्र. | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | कुल योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प्राप्तांक | | | | | | | |
| पूर्णांक | 10 | 10 | 10 | 10 | 24 | 36 | 100 |
| पुनः जाँच | | | | | | | |

**जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर**

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) प्रतिक्रमण ठाने (करने) की आज्ञा लेने का पाठ है -

(क) इच्छामि ठामि (ख) आगमे तिविहे

(ग) इच्छामि णं भंते (घ) अरिहंतो महदेवो ( )

(b) इच्छामि ठामि का पाठ है -

(क) ज्ञान के अतिचारों का (ख) सम्यक्त्व ग्रहण का

(ग) संक्षिप्त प्रतिक्रमण का (घ) कायोत्सर्ग शुद्धि का ( )

(c) 'स्वदार संतोष परदार विवर्जन' के स्थान पर स्त्रियों को प्रतिकमण करते समय बोलना चाहिए -

(क) स्वपति संतोष परपुरुष विवर्जन (ख) परपति संतोष स्वपुरुष विवर्जन

(ग) स्वपुरुष संतोष परपति विवर्जन (घ) स्वपुरुष विवर्जन परपति संतोष ( )

(d) किस पाठ में साधु साध्वियों को 14 प्रकार की वस्तुओं का निर्दोष दान देने का उल्लेख है -

(क) दसवाँ देसावगासिक व्रत (ख) बारहवाँ अतिथि संविभाग व्रत

(ग) ग्यारहवाँ प्रतिपूर्ण पौषध व्रत (घ) छठा दिशिव्रत ( )

(e) पक्खी का प्रतिक्रमण करते समय कितने लोगस्स का काउस्सग्ग करना चाहिए -

(क) 12 (ख) 04

(ग) 08 (घ) 20 ( )

(f) दर्शन मोहनीय की कितनी प्रकृतियाँ हैं -

(क) 02 (ख) 03

(ग) 04 (घ) 28 ( )

(g) मद्य मांस का सेवन करना किस आयुष्य बंध का कारण है -

(क) नरकायु (ख) तिर्यंचायु

(ग) मनुष्यायु (घ) देवायु ( )

(h) राजा मेघरथ के भव में कबूतर की रक्षा कर तीर्थंकर गोत्र का उपार्जन करने वाले तीर्थंकर थे -

(क) 14वें (ख) 18वें

(ग) 16वें (घ) 12वें ( )

(i) 'मेरे अन्तर भया प्रकाश' प्रार्थना की रचना की -

(क) आचार्य श्री हस्ती (ख) आचार्य श्री हीरा

(ग) उपाध्याय श्री मान (घ) मुनि श्री गौत्तम ( )

(j) बर्फादि मिलाकर ठण्डा किया गया आमरस बर्फ गलने से कितनी देर तक सचित रहता है -

(क) दो घड़ी तक (ख) एक घड़ी तक

(ग) तीन घड़ी तक (घ) चार घड़ी तक ( )

**प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 10x1 = (10)**

(a) जिन संसाधनों से कर्मों का निरन्तर बन्ध होता है, उसे कर्मादान कहते हैं। ( )

(b) इच्छामि खमासमणो के पाठ से साधु साध्वियों की संयम रूप यात्रा की ( )
साता पूछकर अविनय आशातना के लिए क्षमायाचना की जाती है। ( )

(c) उपाध्याय 36 गुण करके विराजमान हैं। ( )

(d) चौरासी लाख जीवयोनि के पाठ में चार लाख योनियाँ मनुष्य की होती हैं। ( )

(e) व्यवहार समकित के पाँच लक्षण होते हैं। ( )

(f) साता वेदनीय कर्म आठ प्रकार से भोगा जाता है। ( )

(g) अन्तराय कर्म आठ प्रकार से बन्धता है। ( )

(h) गोत्र कर्म की स्थिति जघन्य आठ मुहूर्त उत्कृष्ट 20 कोडाकोडी
सागरोपम की होती है। ( )

(i) शान्तिनाथ भगवान अविवाहित थे। ( )

(j) शीतलता व आर्द्रता में अचित पानी जल्दी सचित हो जाता है। ( )

**प्र.3 मुझे पहचानो :- 10x1 = (10)**

(a) जिन नहीं पर जिन सरीखे हैं, केवली नहीं पर केवली सरीखे हैं। .....

(b) अन्तिम मरण समय साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका मुझे ग्रहण कर .....
समाधि मरण प्राप्त करते हैं।

(c) श्रावक श्राविकाओं के लिए जानने योग्य किन्तु आचरण करने योग्य नहीं है। .....

(d) मेरे पाठ से आगम शास्त्र के पठन पाठन में लगे 14 अतिचारों की आलोचना .....
की जाती है।

(e) मेरे पाठ से हिंसा, चोरी, झूठ, मैथुन, परिग्रह तथा देव गुरू धर्म सम्बन्धी .....
मिथ्या मान्यताओं आदि पापों की आलोचना की जाती है। .....

(f) मैं एक ऐसा कर्म हूँ, जिसके उदय से ज्ञान गुण आच्छादित होता है। .....

(g) मेरी जघन्य स्थिति चार माह की है, मुझमें मरने वाला जीव मनुष्य गति .....
प्राप्त करता है।

(h) मेरा अबाधाकाल 7 हजार वर्ष का है। .....

(i) मैंनें कबूतर की रक्षा के लिए अपने शरीर का मांस दे दिया। .....

(j) चारों ओर अंधेरा है, एक सहारा तेरा है, किस प्रार्थना का अंश है ? .....

**प्र.4** प्रश्न एवं उत्तर दोनों क्रम से नहीं दिये हुए हैं, आप उत्तर की जोड़ी मिलाकर सही उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए :- **10x1 = (10)**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| (a) | निलंछणकम्मे | - | दूजा अणुव्रत | ..... |
| (b) | पर परिवाद | - | चौथा अणुव्रत | ..... |
| (c) | अहो कायं-काय | - | आओ भगवन आओ | ..... |
| (d) | भोमालिए | - | 18 पापस्थान | ..... |
| (e) | मेहुणविहिं | - | कर्मादान | ..... |
| (f) | दर्शनावरणीय की उत्तर प्रकृतियां | - | 05 | ..... |
| (g) | सूखे तालाब की दरार | - | 08 | ..... |
| (h) | बंधन | - | 09 | ..... |
| (i) | स्पर्श | - | अप्रत्याख्यानी क्रोध | ..... |
| (j) | बोधि बीज पाया | - | इच्छामि खमासमणो | ..... |

**प्र.5** निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए :- **12x2 = (24)**

(a) दिवस सम्बन्धी प्रायश्चित्त की विशुद्धि के लिए कायोत्सर्ग करने की प्रतिज्ञा करने का पाठ लिखिए।

.....

.....

(b) चार मूल सूत्र कौन-कौनसे हैं ?लिखिए।

.....

.....

(c) आठ सम्पदा के नाम लिखिए।

.....

.....

(d) **सातवाँ उपभोग-परिभोग परिमाण व्रत के कोई 2 अतिचार लिखिए।**

.....

.....

(e) **नवमाँ सामायिक व्रत के प्रथम दो अतिचार लिखिए।**

.....

.....

(f) **नो कषाय मोहनीय के नव भेद लिखिए।**

.....

.....

(g) **शुभ नाम कर्म बंधने के कारण लिखिए।**

.....

.....

(h) **'राजा मेघरथ शरणागतवत्सल थे ' कैसे ?लिखिए।**

.....

.....

(i) **राजा मेघरथ ने कबूतर की रक्षा के लिए क्या किया ?**

.....

.....

(j) **उपवास ग्रहण करने का पच्चक्खाण सूत्र लिखिए।**

.....

.....

(k) **तन धन परिजन ..... किया स्वत्व का नाश। पूर्ण कीजिए।**

.....

.....

(l) **लिया तुम्हारा शरणा है ..... मुझको विजय दिलाओ। पूर्ण कीजिए।**

.....

.....

**प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर 2-3 वाक्यों में दीजिए :-** **12x3 = (36)**

(a) **श्रावक के तीसरे मनोरथ को स्पष्ट कीजिए।**

.....

.....

.....

(b) **मैथुन संज्ञा उत्पन्न होने के तीन कारण लिखिए।**

.....

.....

.....

(c) **उच्च गोत्र कितने प्रकार से बंधता है एवं कितने प्रकार से भोगा जाता है ?**

.....

.....

.....

(d) **ग्यारहवाँ प्रतिपूर्ण पौषध व्रत के विषय में लगने वाले अतिचारों को लिखिए।**

.....

.....

.....

(e) **अरिहंत भगवान के बारह गुण लिखिए।**

.....

.....

.....

(f) **साधुजी के 27 गुण लिखिए।**

.....

.....

.....

(g) **तस्स धम्मस्स का पाठ लिखिए।**

.....

.....

.....

(h) **संलेखना के पाँच अतिचार लिखिए।**

.....

.....

.....

(i) **भगवान शान्तिनाथ जी के जन्म, दीक्षा एवं केवलज्ञान कल्याणक कब-कब हुए ?**

.....

.....

.....

(j) **दयाव्रत ग्रहण करने का पाठ लिखिए।**

.....

.....

.....

(k) **निज को इतना भूल गया ..... मुझको भी बिठलाओ। पूर्ण कीजिए।**

.....

.....

.....

.....

(l) **अप्काय में सचित्त अचित्त के विवेक को 4-5 पंक्तियों में स्पष्ट कीजिए।**

.....

.....

.....